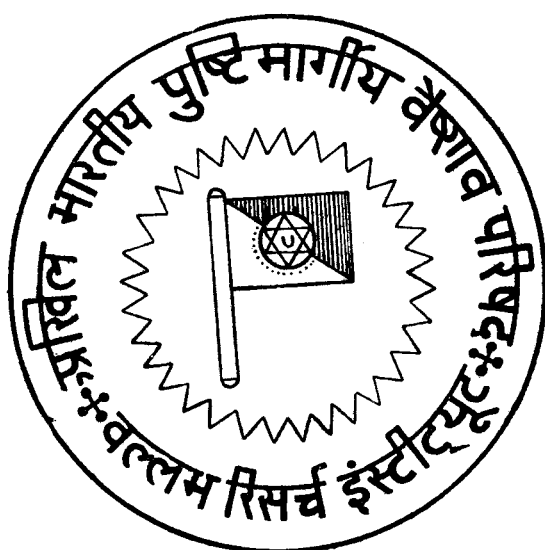


# वार्ता-साहित्य

( एक वृहत् अध्ययन )

लेखक

डा० हरिहरनाथ टण्डन



बल्लभ रिसर्च इंस्टीट्यूट, जतीपुरा (मथुरा)

के

तत्वावधान में

भारत प्रकाशन मन्दिर,

अलीगढ़ द्वारा प्रकाशित ।

प्रकाशक  
भारत प्रकाशन मंदिर,  
अलीगढ़ ।

मूल्य १५)

मुद्रक  
आदर्श प्रेस  
अलीगढ़ ।

वचनामृत-६

विचारहु॥ ४४ ॥ स्वसवता ॥ ४५ ॥ विचारवन्  
 दिदिनैदिवसैकल्यानयव ॥ ४६ ॥ पन  
 भोगतुं डहुचय्यौनैदिवसै श्रीपान ॥ ४७ ॥  
 जीपध्यासाहुता ॥ ४८ ॥ त्वहापोतानोडहुता  
 भद्रकल्याण ॥ ४९ ॥ अगलप्रसंगक ॥ ५० ॥ त्वसव  
 त्वभावत्रणपकारनाहे ॥ ५१ ॥ जोजीवधर्मम

सं० १७९६ वाली वचनामृत की पोथी में वि० सं० १६९३ वैसाख शुक्ल  
 छठ का प्रसंग इसमें मूल लेखक की साक्षात् उपस्थिति की सूचना  
 मिलती है। अतः मूल लेखक की पोथी की यह सं० १७९६  
 वाली प्रतिलिपि पोथी है।

वचनामृत-७

वधाइकरिकैगाडे ॥ ५२ ॥ चरनौ सुवधगोकुल  
 गाखानंदसमजी ॥ ५३ ॥ अकाव्यचारसोतुल  
 सोरासकेछोरेभाडे ॥ ५४ ॥ तुलसीदासबहुभा  
 शे ॥ ५५ ॥ सोनंददासजीसवधीसुसांइजीकेस  
 वकनयो ॥ ५६ ॥ नवनुससीदासनैकहो ॥ ५७ ॥ भाई  
 नैविभीचारकीयो ॥ ५८ ॥ नवनंददासजीनै  
 कहो ॥ ५९ ॥ विभीचारतौकीयोपरंतुसुखबहु  
 नपायो ॥ ६० ॥ २३ ॥ अकाव्यचारसोतुल

नन्ददासजी के तुलसीदास के भाई होने का उल्लेख है।

नाथजुनेमीगितवरायजुनेआयेदीनीतबआजुनेनेत्रसोलगायेवैफेरिदीनीतवरायजुनेआये  
 मेधरीपाछेनोननवोंपधारेआजुतोनोननवरिवैपोंठेपाछेशीरायजुतेगोपालजुवेधरपधारे  
 तबपोथीगोपालजूवोंदीनीतबपोथीबीबीबीबीवेगदगदवैठनये॥ पाछेनारायणदासनेस्वयं  
 वोंबुलायोतबपोथीलिखाईसोउनदोयप्रतिद्वीनीएवउनवोंदीनीदूसरीनेष्वपासरहा॥  
 सोगोपालजुरायजुनेजीनिनाही॥ सोसनेहनीवेआगेब्रहेसोवावैयेवओरस्नेहारहेसोवाने  
 अनिवेब्रहीतबउनब्रह्मोरहनीस्वायेदेहु॥ तबआयेवेब्रहीतबउनलीखिदीनी॥ एसेप्रति  
 पीयसातनई॥ तबइहप्रतिधनतानाईयोपरावेतिनदेवीतबआजुवेआगेब्रातवही॥ तबआ  
 जुयोंवेषोनदीयो॥ वेसबबुलाये॥ परस्परपूछे॥ पाछेजीनीगोरायजुवेद्वीप्रहेतबब्रह्मोजोगो  
 पवस्तुप्रगटनईनगवतरीछामानी॥ वीरमि॥ सेठपुरुसोतप्रदस्यौवैगोपालदा  
 सनेश्रीमदनमोहनजुवीमेवाजलीनीति सोवरते॥ गोपालदासआपनौतनव्रीतनवरते॥

॥ श्री श्री लयनम ॥ एक समे गोवर्धनदास परमजागृतो उत्तमसोऽजैनमेकसमद्वेधरपाये  
 सो श्री लयनने श्री गो नलोकीनो ॥ नोजनकायो ॥ नोजनकरि वेठे तव नटजने ब्रह्मो ब्रह्मसुनायो ॥  
 रात्रिदावसवैषवनब्रीवातीकरे सोवरतेवरते तिनदीवसतिनरात्रीवातितनरा ॥ योखेदावस  
 देहब्रह्मचि नदीतवनदी एने उनब्रो नोनवरवायोमाहा पूसादजावायो सो पाप्मा मोगिवे  
 अपने देसब्रोचले ॥ तव श्री लयनने श्री वाते लिपि सोदिन प्रतिज्ञान श्री पाठ करे ॥ मोरब्रो उ  
 नजवदी वैषव पावेता सो ब्रह्म ॥ योवरते नट मुको सरीरय कोतवगो विंदन नट वेदा सो ब्रह्मो  
 वावा ए पोथी अरु नोधरवी सो नसब श्री गो कुल पठरीयो ॥ तदुपरीत गोविंदन नट श्री गो कु  
 ल नाथ जुवे सेवक ॥ सो नव श्री गो कुल पाए ॥ तव श्री लयनने श्री गो कुल नाथ जुदासाये ॥ तव  
 श्री गु सीरी जु प्रसी नन ए नट जुने श्री जुवे मन ब्रीवृत जीनि ॥ सो प्रथम नी उनै वेदन श्री वलनने  
 दीयो ॥ श्री गु सीरी जु नो न्या से ज्पावो ॥ सो गोविंदन नट ने बो होत नेट पठरी नीति नीति के मनो  
 रषव्रीए ॥ सो ए से वरते बो होत दर्षवीते ॥ तव ने नवल घट्टो ॥ तव बी चार व्रीयो पोथी श्री  
 गु सीरी जुने श्री जागवत सुबोधनी टीवारी पनी सब पोथी परु नेट वैषव जव चले तव उनको  
 सो पी वही आवलन वै न्यागे धरी ॥ मो अरु वही श्री वापव्री वस्तु बेरा पावे ॥ वे वैषव चले सो श्री  
 गो कुल पाये ॥ श्री गो कुल नाथ जुवे न्यागे शिनेट मोर पोथी ॥ पत्र माहा प्रनु ने बी च्योत  
 व हू दो नरि न्यायो ॥ अरु वही यह ने वेदन यित नी ब्रह्म तव पोथी श्री हस्त सो खोला ॥ तव बी च  
 छोरी जो परी नी ब्रह्म ॥ तव बी च ॥ बी चि ब्रह्मो सि सो जगदी अरु हू दो नरि न्यायो ॥ सो नित  
 गंध पाठ करते ॥ ताबे पाछे मोरब्रो पाठ करते ॥ एव वार्ता पक्षवादी ॥ बी चि वे पेटी मेधरि  
 वे तारो मारि ब्रह्म नोजन ब्रो पधारें ॥ योवरतें वहु तवर सवाते ॥ तव ने नटो प्रनारमयो तव श्री  
 वजु सो ब्रह्म पोथी पेटी मेहे सो लायो ॥ तव श्री राय जु ने पेटी मोलिके पोथी श्री हस्त मे दीनी सो  
 लीनी ले करि ने न सो जगदी फेरि राय जु नो दीनी राय जु ने पेटी मेधरी सो नित्य योवरें सो ए वर  
 वसराय जु ने देखी तव नी ब्रीवागी ॥ तव दीन के श्री अ श्री गो पाल जु हूते ॥ सो बात श्री रावे जु ने  
 ब्रह्म ॥